

दो अंक

1. मानसिक पराधीनता पाठ के लेखक का नाम— प्रेमचन्द ।
2. किसी राष्ट्र या जाति का सबसे बहुमूल्य अंग— उसकी भाषा, उसकी सभ्यता, उसके विचार, उसका कलचर ।
3. हमारे कलचर के अंग— हमारे धार्मिक विचार, हमारी सामाजिक रूढ़ियाँ, हमारे राजनैतिक विद्वान्त, हमारी भाषा और साहित्य, हमारा रहन—सहन, हमारे आचार—व्यवहार ।
4. अंग्रेजी वेष के प्रेमीयों का अलग अलग राय यह कि अंग्रेजों से मिलने जाता हूँ तो जूते बाहर नहीं उतारने पड़ते, इससे सफर करने में बड़ा सुभीता होता है, ऐसे कपड़े पहनने से देह में बड़ी चुस्ती और फुरती आ जाती है ।
5. हमारी सभ्यता का आदर्श कहती है—जरूरतों को मत बढ़ाओ, पश्चिमी सभ्यता का आदर्श है—अपनी जरूरतों को खूब बढ़ाओ, अपने लिए जियो और अपने लिए मरो ।
6. हमारी सभ्यता कृषि—प्रधान थी, हम गाँवों में रहते थे—पश्चिमी सभ्यता व्यवसाय प्रधान है और बड़े—बड़े नगरों का निर्माण करती है ।
7. हमारी सभ्यता में सम्मिलित कुटुम्ब एक प्रधान अंग था, पश्चिमी सभ्यता में परिवार का अर्थ है—केवल स्त्री और पुरुष ।
8. हमारी सभ्यता में नम्रता का बड़ा महत्व था, पश्चिमी सभ्यता में आत्मप्रशंसा का महत्व है ।
9. हमारी सभ्यता में धन का स्थान गौण था, विद्या और आचरण से आदर मिलता था—पश्चिमी सभ्यता में धन ही मुख्य वस्तु है ।
10. हमारी सभ्यता का आधार धर्म था, पश्चिमी सभ्यता का आधार संघर्ष है ।
11. हिम्मत औ जिन्दगी पाठ के लेखक का नाम—रामधारी सिंह दिनकर ।
12. पानी में जो अमृत वाला तत्व है, उसे वह जानता हैं जो धूप में खूब सूख चुका हैं, वह नहीं जो रेगिस्तान में कभी पड़ा ही नहीं है ।
13. लहरों में तैरने का जिन्हें अभ्यास है, वे मोती लेकर बाहर आँगे ।
14. चाँदनी की ताजगी और शीतलता का आनन्द वह मनुष्य लेता है जो दिन भर धूप में खटकर लौटा है, जिसके शरीर को अब तरलाई की जरूरत महसूस होती है ।
15. भोजन का असली स्वाद उसी को मिलता है, जो कुछ दिन बिना खाये भी रह सकता है ।
16. अकबर ने तेरह साल की उम्र में दुश्मन को परास्त कर दिया था ।
17. महाभारत में जीत पाण्डवों की हुई क्योंकि उन्होंने लाक्षागृह की मुसीबत झेली थी और वनवास की जोखिम को पार किया था ।
18. श्री विस्टन चर्चिल ने जिन्दगी के बारे में कहा है—जिन्दगी की सबसे बड़ी सफलता हिम्मत है, आदमी के और सारे गुण उसके हिम्मती होने से ही पैदा होते हैं ।

19. जिन्दगी की दो सूरते हैं—पहली बड़े से बड़े काम करने को किसी भी तरह समस्या झेलने को तैयार और दूसरी सूरत गरीब आत्माओं की सहायता में ही आत्म संतुष्टि पाना।
20. साहस की जिन्दगी सबसे बड़ी जिन्दगी होती है।
21. सहसी मनुष की पहली पहचान यह है कि वह इस बात कि चिन्ता नहीं करता कि तमाशा देखने वाले लोग उसके बारे में क्या सोच रहे हैं।
22. बुद्धगया पाठ के लेखक का नाम—रवीन्द्रनाथ ठाकुर।
23. शाक्य—कुल का राजपुत्र गौतम मनुष्य का दुख दूर करने की साधना से आधी रात को राजमहल त्यागकर बाहर निकल पड़ा।
24. जापान से मछुआ बुद्धगया के मंदिर में आया था। मंदिर के सामने अपने हाथों को जोड़कर कह रहा था कि मैं बुद्ध की शरण लेता हूँ।
25. मनुष्य ने मूर्ति, चित्र और स्तूप द्वारा बुद्धदेव का वंदन किया। अंधेरी गुफाओं की दीवारों पर चित्र बनाए, भारी पत्थरों को पहाड़ की चोटियों पर ले जाकर मंदिर बनाए, शिल्प—संपदा का निर्माण किया।
26. बुद्धदेव ने मानव से ऐसी अभिव्यक्ति माँगी थी जो दुःसाध्य हो, चिर—जागरूक हो, जो बंधनों पर विजयी हो।
27. सबसे बड़ा दान श्रद्धा—दान होता है। वह अपने आपका दान है।
28. भगवान बुद्ध ने कहा है—अक्रोध के द्वारा क्रोध पर विजय लाभ करो। अपने क्रोध को और दूसरों के क्रोध को अक्रोध द्वारा पराजित करो।
29. गपशप पाठ के लेखक का नाम नामवर सिंह।
30. आदमी का सच्चा रूप —उसकी बेकार की ही बातों से खुलता है, बेकाम की बातों से, निरर्थक शब्दों का प्रयोग से पता चलता है।
31. गपशप पाठ से निष्प्रयोजन पत्र के बारे में लेखक ने कहा है— आदमी यो ही लिखना चाहता और लिख जाता है, इस पत्र का कोई उत्तर नहीं हो सकता लेकिन उत्तर की प्रतीक्ष बड़ी बेकरारी से की जाती है।
32. विद्यार्थी के बेकार खर्च के बारे में— लेखक ने कहा है कि कॉलेज फीस भरना, पाठ्य पुस्तक खरीदने के लिए पैसे खर्च करने से विद्यार्थी का असली रहस्य नहीं खुलता। जलपानों से, निष्प्रयोजन, योजनाहीन आकस्मिक व्यय से पहचाना जाता है।
33. मेरे राम का मुकुट भीग रहा है इस पाठ के लेखक का नाम विद्यानिवास मिश्र है।
34. लेखक के पुत्र चिरंजीव और मेहमान की बेटा रात को नौ बजे संगीत कार्यक्रम सुनने के लिए गये।
35. समस्या पाठ के लेखक का नाम क्या है
36. समस्या पाठ में स्वदेश प्रेम के बारे में क्या कहा गया है।— प्रेम धूर्तों का सबसे भयंकर ढोंग है, संसार में आजकल जो चारों ओर घोर हाहाकार का मूल कारण है स्वदेश प्रेम ही है।

37. 'लीग ऑफ़ नेशन्स' की मूल सिद्धांत क्या है –संसार में सदैव शक्ति-सामंजस्य हो अर्थात् कोई एक अथवा दो-एक राष्ट्र मिलकर संसार के अन्य राष्ट्रों को नीचा न दिखा सकें।
38. मित्रों के चुनाव की उपयुक्तता पर लेखक ने क्या कहा है-इस पर ही उसके जीवन की सफलता निर्भर हो जाती है। संगति का प्रभाव हमारे आचरा पर बड़ा भारी पड़ता है। हमें विवेक से मित्रों को चुनना है।
39. विश्वासपात्र मित्र के बारे में लेखक ने क्या बताया है-विश्वासपात्र मित्र से बड़ी भारी रक्षा रहती है। जिसे ऐसा मित्र मिल जाये उसे समझना चाहिए कि खजाना मिल गया। विश्वासपात्र मित्र जीवन की एक औषधि है।
40. मित्र का कर्तव्य के बारे में क्या बताया है- उच्च और महान कार्य में इस प्रकार सहायता देना, मन बढ़ाना और साहस दिलाना कि तुम अपनी निज की सामर्थ्य से बाहर का काम कर जाओ।
41. मित्रों में यह आशा रखनी चाहिए कि वे उत्तम संकल्पों में हमें दृढ़ करना है, दोषों से हमें बचायेंगे, कुमार्ग पर पैर रखने पर सचेत करेंगे, हमें उत्साहित करेंगे।
42. सच्चे मित्र पथ-प्रदर्शक के समान होना चाहिए। जिस पर हम पूरा विश्वास कर सकें, भाई के समान होना चाहिए, सच्ची सहानुभूति होनी चाहिए।

पाठ – 7 मेरे राम का मुकुट भीग रहा है और पाठ 9 भारतीय संस्कृति – 2 अंक के लिए
read only notes